|| सीता राम ||

श्री अद्वैताचार्य जी महाराज की विरचित पुस्तक, साधना सिद्धि से शुद्ध बजरंग बाण उपलब्ध करवा रहा हूँ | लखनऊ के श्री अशोक श्रीवास्तव (Mob. 9415567319), महाराज जी के परम प्रिय शिष्य, ने पुस्तक देखकर मेहनत से स्वयं टाइप करके मुझे जनहितार्थ ये उपलब्ध करवाया है | पुनः संशोधन करके, PDF फ़ाइल में दे रहा हूँ | श्री बजरंग बाण पाठ से अनेकों लोगों के कार्य सिद्ध हुए हैं, इसमें न तो कोई अतिशयोक्ति है और न ही कोई संशय |

कार्य की सिद्धि के लिए कलिकाल में इससे अच्छा अन्य कोई उपाय नहीं है, ऐसा हमारे महाराज जी कहा करते थे | उस समय जो बजरण बाण हमें उपलब्ध थे, या तो त्रुटिपूर्ण थे और या आधे-अधूरे | शुद्ध बजरंग बाण मुझे महाराज जी द्वारा 70 के दशक में मिला था | मैंने इसका अनुष्ठान किया, अन्य को भी करवाया, जिसने भी संयम और पूर्ण आस्था से किया, उन सबको चमत्कारिक रूप से वांछित फल मिला |

बजरंग बाण का पाठ नित्य करने का नियम बना लें | संयम, आस्था और समय हो तो अनुष्ठान भी करें | महाराज जी कहते थे कि अगर अनुष्ठान के

रूप में बजरंग बाण कर रहे हैं, तब अपने गुरुजनों से परामर्श, उसको करने के दिशा-निर्देश अवश्य ले लें |

एक बात का ध्यान रखें किसी के भी अनहित की भावना से तो बिल्कुल भी इसका पाठ न करें |

अनुष्ठान कैसे करें, इसके लिए यू ट्यूब में महाराज जी द्वारा बनवाए गोपाल राजू के अन्य वीडिओ भी देख सकते हैं | एक का लिंक है:

At: @gopalraju

टाइटल -

Bajrang Baan Anusthan | बजरंग बाण अनुष्ठान का सरलतम उपाय | चमत्कारी बजरंग बाण प्रयोग -

https://youtu.be/uiF-FjHHvF8

साधना सिद्धि पुस्तक के पन्ने भी अंत मे दे रहे हैं, कहीं हमसे त्रुटि बन गई हो तो कृपया संशोधन कर लें |

एक महत्वपूर्ण बात बीज मंत्रों से संबंधित | उच्चारण में कहीं त्रुटि न हो | अब क्यूंकि बजरंग बाण में बीज भी आते हैं, उनका शुद्ध उच्चारण किसी योग्य विद्वान से अवश्य कर लें | जो हमारे संज्ञान में आया, हो सकता है कि कोई सहमत न हो, उसका एक वीडिओ भी बना दिया है | मन है तो यू ट्यूब में वो भी देख सकते हैं | लिंक है:

टाइटल -

ह्रींग ह्रीम या हरीम (Hreeng Hreem Or Hareem) ? क्या है शुद्ध उच्चारण ?

Click at:

https://youtu.be/_HGbD7CxTPI

|| ध्यान श्लोक ||

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

हं हनुमते नमः

श्री गुरुदेव भगवान की जय

श्री बजरंग-बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते,

विनय करे सन्मान |

तेहि के कारज सकल शुभ,

सिद्ध करै हनुमान ।।

जय हनुमन्त सन्त हितकारी ।

सुनि लीजै प्रभु अर्ज हमारी ।।

जन के काज विलम्ब न कीजै ।

आतुर दौरि महासुख दीजै ॥

जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा ।

सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥

आगे जाइ लंकिनी रोका ।

मारेहु लात गई सुर लोका ॥

जाई विभीषण को सुख दीन्हा ।

सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥

बाग उजार सिन्धु मँह बोरा ।

अति आतुर यम कातर तोरा ॥

अक्षय कुमार को मारि संहारा ।

लूम लपेट लंक को जारा ॥

लाह समान लंक जरि गई ।

जय जय ध्वनि सुरपुर में भई ॥

अब विलम्ब केहि कारण स्वामी ।

कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥

जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता ।

आतुर होइ दुख करहु निपाता ॥

जय गिरिधर जय जय सुख सागर |

सुर समूह समरथ भट नागर ॥

ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले ।

बैरिहि मारु बज्र सम कीले ॥

गदा बज्र ले बैरिहिं मारो ।

महाराज निज दास उबारौ ||

सुनि हंकार हुंकार दै धावो |

वज्र गदा हनु विलम्ब न लाओ ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा ।

ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥

सत्य होहु हरि सत्य पाइके ।

राम दूत धरु मारु धाइके ॥

जय हनुमन्त अनन्त अगाधा ।

दुख पावत जन केहि अपराधा ।।

पूजा जप तप नेम अचारा ।

नहिं जानत है दास तुम्हारा ।।

वन उपवन जल थल गृह माँहीं ।

तुम्हारे बल हम डरपत नाहीं ॥

पाँय परौं कर जोरि मनावों ।

अपने काज लागि गुण गावों ॥

जय अंजनी कुमार बलवन्ता ।

शंकर स्वयं वीर हनुमन्ता ॥

बदन कराल दनुज कुल घालक ।

भूत पिशाच प्रेत उर शालक ॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।

अग्नि बैताल वीर मारी मर ।।

इन्हें मारु तोहि शपथ राम की ।

राखु नाथ मर्याद नाम की ॥

जनक सुता पति दास कहावों ।

ताकी शपथ विलम्ब न लावों ॥

जय जय जय ध्वनि होत अकाशा |

सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ॥

शरण शरण कर जोरि मनावों ।

यहि अवसर अब केहि गोहरावों ।।

उठु उठु उठु तोहिं राम दोहाई ।

पाँय परौं कर जोरि मनाई ।

ॐ चं चं चं चं चपल चलन्ता ।

ॐ हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ॥

ॐ हं हं हाक देत कपि चंचल ।

ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ॥

अपने जन को कस न उबारो ।

सुमिरत होत अनन्द हमारो ॥

ताते विनती करौं पुकारी ।

हरहु सकल प्रभु विपति हमारी ।।

ऐसो बल प्रभाव प्रभु तोरा ।

कस न हरहु दुख संकट मोरा ॥

हे बजरंग बाण सम धावो ।

मेटि सकल दुख दरश दिखाओ ।।

हे कपिराज काज कब ऐहौ ।

अवसर चूकि अन्त पछितैहौ ॥

जन की लाज जात ऐहि बारा ।

धावहु हे कपि पवन कुमारा ॥

जयति जयति जय जय हनुमाना |

जयति जयति गुण ज्ञान निधाना ||

जयति जयति जय जय कपिराई ।

जयति जयति जय जय सुखदाई ॥

जयति जयति जय राम पियारे ।

जयति जयति जय सिया दुलारे ।।

जयति जयति मुद मंगल दाता ।

जयति जयति त्रिभुवन विख्याता ।।

यहि प्रकार गावत गुण शेषा ।

पावत पार नहीं लवलेशा ॥

नाम रूप सर्वत्र समाना ।

देखत रहत सदा हरषाना ॥

विधि शारदा सहित दिन राती ।

गावत कपि के गुण गण पाती ।।

तब सम नहीं जगत बलवाना ।

करि विचार देखेउँ विधि नाना ॥

यह जिय जानि शरण तब आई ।

ताते विनय करौं चित लाई ॥

सुनि कपि आरत वचन हमारे ।

मेटहुँ सकल दुःख भ्रम भारे ॥

यहि प्रकार विनती कपि केरी ।

जो जन करै लहै सुख ढेरी।।

या के पढ़त वीर हनुमाना ।

धावत बाण तुल्य बलवाना॥

मेंटत आय दुःख क्षण माहीं ।

दे दर्शन रघुपति ढिग जाहीं ॥

पाठ करै बजरंग बाण की ।

हनुमत रक्षा करै प्राण की ॥

दीठ मूठ टोनादिक नासै ।

पर कृत यन्त्र मन्त्र नहिं त्रासै ॥

भैरवादि सुर करे मिताई ।

आयसु मानि करे सेवकाई ॥

प्रण कर पाठ करे मन लाई ।

अल्प मृत्यु गृह दोष नसाई ॥

आवृत ग्यारह प्रति-दिन जापै |

ताकी छाँह काल नहिं चापै ॥

दै गुग्गुल की धूप हमेशा ।

करै पाठ मन मिटे कलेशा ॥

यह बजरंग बाण जेहि मारै ।

ताहि कहो फिर कौन उबारै ॥

शत्रु समूह मिटै सब आपै ।

देखत ताहि सुरासुर कापै॥

तेज प्रताप बुद्धि अधिकाई ।

रहैं सदा कपिराज सहाई ॥

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै,

सदा धरै उर ध्यान |

तेहि के कारज तुरत ही,

सिद्धि करै हनुमान ||

अकिंचन निरीह गोपाल राजू

॥ श्री राम ॥

बजरंग-बाण

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करै सन्मान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान ॥

जय हनुमन्त सन्त हितकारी ।
सुनि लीजै प्रभु अर्ज हमारी ॥
जन के काज विलम्ब न कीजै ।
आतुर दौरि महासुख दीजै ॥
जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा ।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ॥
आगे जाई लंकिनी रोका ।
मारेहु लात गई सुर लोका ॥
जाई विभीषण को सुख दीन्हा ।
सीता निरखि परम पद लीन्हा ॥
बाग उजार सिन्धु महँ बोरा ।
अति आतुर यम कातर तोरा ॥
अक्षय कुमार को मारि सँहारा ।
लूम लपेट लंक को जारा ॥
लाह समान लंक जरि गई ।
जय जय ध्वनि सुरपुर में भई ॥
अब विलम्ब केहि कारण स्वामी ।
कृपा करहु प्रभु अन्तर्यामी ॥
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता ।
आतुर होइ दुख करहु निपाता ॥
जयगिरिधर जय जय सुख सागर ।
सुर समूह समरथ भट नागर ॥

ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले ।
बैरिहि मारु बज्र सम कीले ॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो ।
महाराज निज दास उबारो ॥
सुनि हंकार हुंकार दै धावो ।
बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा ।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ॥
सत्य होहु हरि सत्य पाइके ।
राम दूत धरु मारु धाइके ॥
जय हनुमन्त अनन्त अगाधा ।
दुख पावत जन केहि अपराधा ॥
पूजा जप तप नेम अचारा ।
नहिं जानत है दास तुम्हारा ॥
बन उपबन जल थल गृह माँहीं ।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं ॥
पाँय परौं कर जोरि मनावौं ।
अपने काज लागि गुण गावौं ॥
जय अंजनी कुमार बलवन्ता ।
शंकर स्वयं वीर हनुमन्ता ॥
बदन कराल दनुज कुल घालक ।
भूत पिशाच प्रेत उर शालक ॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर ।
अग्नि बैताल वीर मारी मर ॥
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की ।
राखु नाथ मर्याद नाम की ॥
जनक सुता पति दास कहावौं ।
ताकी शपथ विलम्ब न लावौं ॥

जय जय जय ध्वनि होत अकाशा ।
सुमिरत होत दुसह दुःख नाशा ।।
शरण शरण कर जोरि मनावौं ।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।।
उठु उठु उठु तोहिं राम दोहाई ।
पाँय परौं कर जोरि मनाई ।
ॐ चं चं चं चं चपल चलन्ता ।
ॐ हनु हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता ।।
ॐ हं हं हाक देत कपि चंचल ।
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल ।।
अपने जन को कस न उबारै ।
सुमिरत होत आनन्द हमारे ।।
ताते विनती करौं पुकारी ।
हरहु सकल प्रभु विपति हमारी।।
ऐसो बल प्रभाव प्रभु तोरा ।
कस न हरहु दुख संकट मोरा ।।
हे बजरंग बाण सम धावो ।
मेटि सकल दुख दरश दिखावो ।।
हे कपिराज काज कब ऐहौ ।
अवसर चूकि अन्त पछितैहौ ।।
जन की लाज जात ऐहि बारा ।
धावहु हे कपि पवन कुमारा ।।
जयति जयति जय जय हनुमाना ।
जयति जयति गुण ज्ञान निधाना ।।
जयति जयति जय जय कपिराई ।
जयति जयति जय जय सुखदाई ।।
जयति जयति जय राम पियारे ।
जयति जयति जय सिया दुलारे ।।

जयति जयति मुद मंगल दाता ।
जयति जयति त्रिभुवन विख्याता ।।
यहि प्रकार गावत गुण शेषा ।
पावत पार नहीं लवलेशा ।।
नाम रूप सर्वत्र समाना ।
देखत रहत सदा हरषाना ।।
विधि शारदा सहित दिन राती ।
गावत कपि के गुण गण पाती ।।
तब सम नहीं जगत बलवाना ।
करि विचार देखेऊँ विधि नाना ।।
यह जिय जानि शरण तब आई ।
ताते विनय करौं चित लाई ।।
सुनि कपि आरत वचन हमारे ।
मेटहुँ सकल दुःख भ्रम भारे ।।
यहि प्रकार बिनती कपि केरी ।
जो जन करै लहै सुख ढेरी।।
या के पढ़त वीर हनुमाना ।
धावत बाण तुल्य बलवाना ।।
मेंटत आय दुःख क्षण माहीं ।
दे दर्शन रघुपति ढिग जाहीं ।।
पाठ करै बजरंग बाण की ।
हनुमत रक्षा करै प्राण की ।।
दीठ मूठ टोनादिक नासै ।
पर कृत यन्त्र मन्त्र नहिं त्रासै ।।
भैरवादि सुर करै मिताई ।
आयसु मानि करै सेवकाई ।।
प्रण कर पाठ करै मन लाई ।
अल्प मृत्यु गृह दोष नसाई ।।

आवृत ग्यारह प्रति-दिन जापै ।
ताकी छाँह काल नहिं चापै ।।
दै गुग्गुल की धूप हमेशा ।
करै पाठ मन मिटै कलेशा ।।
यह बजरंग बाण जेहि मारै ।
ताहि कहौ फिर कौन उबारै ।।
शत्रु समूह मिटै सब आपै ।
देखत ताहि सुरासुर कापै ।।
तेज प्रताप बुद्धि अधिकाई ।
रहैं सदा कपिराज सहाई ।।

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारण तुरत ही, सिद्धि करै हनुमान ।।

कवच

कानन, भूधर, वारि, बयारि, महाविष, व्याधि, दवा अरि घेरे ।
संकट कोटि जहाँ तुलसी हित, मातु-पिता,सुत-बंधु न नेरे ।।
राखहिं राम कृपालु तहाँ, हनुमान से सेवक हैं जेहि केरे ।
नाक, रसातल, भूतल मँह, रघुनायक एक सहायक मेरे ।।

श्री राम

।।श्रीराम।।

श्री सीता चालीसा

दीन मलीन हीन अति, सुमिरौं जनक कुमारि ।
अधम-अधीन क्षुद्र मति, मोहिं किशोरि उबारि ।।
जय जानकी बुद्धि प्रज्ञा मति ।
शरणागत कहँ देति परम गति ।।

परमानुरक्ति—भक्ति प्रेमा अति ।
देति निर्भरा निरति-सुरति रति ।।२।।

उद्भव स्थिति प्रलय कारिनी ।
विधि हरि हर की शक्ति धारिनी ।।

तारन—तरन मुनीश तारिनी ।
उमा रमा शारद उबारिनी ।।४।।

नयन सुनयना नयन उघारिनि ।
योग दृष्टि सत्ता विस्तारिनि ।।

परात्परा वाणी वपु धारिनि ।
नाद बिन्दु अनुस्वार अवतारिनि ।।६।।

अलख अगम अनाम बपु रूपा ।
शब्दाक्षर ध्वनि लय अनुरूपा ।।

श्री परतर श्रेयसा अनूपा ।
अपरम्पार अपार स्वरूपा ।।८।।

राम ब्रह्म सच्चिदानन्द घन ।
श्री रघुवर राघव रघुनन्दन ।।

निर्गुण निराकार जग वन्दन ।
तब दासन हित धरेउ मनुज तन ।।१०।।